मात्र एक संदेश

लेखक : डॉ. नाजी बिन इब्राहीम अल–अर्फज

अनुवादक : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

इस्लामी आमंत्रण एवं निर्देशन कार्यालय

रब्वा – रियाज़, सऊदी अरब

islamhouse.com

1437–2016

अर्पण

- उन लोगों के नाम जो निष्ठापूर्वक और ईमानदारी के साथ सत्य के खोजी हैं।
- जो सचेत बुद्धि वाले हैं।

विषय सूचि

पढ़ने से पूर्व कुछ प्रश्न	4
मूल विषय	5
बाइबल (**नया नियम**) में अल्लाह का एकेश्वरवाद	19
बाइबल (**पुराना नियम**) में अल्लाह का एकेश्वरवाद	21
कुर्आन करीम में अल्लाह का एकेश्वरवाद	23
अन्त	25
एक अन्तिम विचार	34

पढ़ने से पूर्व कुछ प्रश्न :

१. इस एक संदेश का अभिप्राय क्या है?

२. इसके बारे में बाइबल का क्या कहना है?

३. इस विषय में कुर्आन क्या कहता है?

४. इसके बाद, इस बारे में आपका क्या विचार है?

मात्र एक संदेश !

मूल विषय :

आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के बाद, मानव जाति के इतिहास भर में मनुष्यों को मात्र एक ही मौलिक संदेश समर्पित किया गया। लोगों को इस संदेश का स्मरण कराने और उन्हें सीधे मार्ग पर वापस लाने के लिए, एकमात्र सत्य पूज्य (अल्लाह) ने ईश्दूतों और पैग़म्बरों जैसे आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (उनपर अल्लाह की दया और शांति अवतरित हो) को मात्र एक संदेश के प्रसार व प्रचार के लिए भेजा, वह संदेश यह है कि :

सत्य पूज्य मात्र एक है,

अतः तुम उसी की पूजा करो।

मात्र एक संदेश !

एकमात्र सत्य पूज्य ही (सृष्टिकर्ता) और पूजनीय है

उसने भेजा :

इस संदेश के प्रसार के लिए किः

....नूह को अल्लाह एक है, अतः अकेले अल्लाह की पूजा करो।

....इब्राहीम को अल्लाह एक है, अतः अकेले अल्लाह की पूजा करो।

....मूसा को अल्लाह एक है, अतः अकेले अल्लाह की पूजा करो।

....ईसा को अल्लाह एक है। अतः अकेले अल्लाह की पूजा करो।

....मुहम्मद को अल्लाह एक है। अतः अकेले अल्लाह की पूजा करो।

मात्र एक संदेश !

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इन दृढ़ संकल्प वाले पैग़ंबरों और इनके अलावा अपने अन्य दूतों और संदेश्वाहकों को, जिनमें से कुछ को हम जानते हैं और कुछ को नहीं, कई कार्यों को अंजाम देने के लिए भेजा, जिनमें से कुछ यह हैं :

१. अल्लाह की वह्य (अर्थात ईश्वरीयआदेश) को प्राप्त कर उसे अपनी जाति के लोगों और अनुयायियों को पहुँचाना।

२. लोगों को तौहीद (एकेश्वरवाद) की तथा हर प्रकार की उपासना (पूजा-पाठ) को अल्लाह के लिए विशिष्ट करने की शिक्षा देना।

३. अपने वचन और कर्म में अच्छा आदर्शरूप ग्रहण करना, ताकि लोग अल्लाह के मार्ग पर चलने में उनका अनुसरण करें।

४. अपने अनुयायियों को अल्लाह से डरने, उसकी आज्ञाकारिता और उसके आदेशों का पालन करने का निर्देश देना।

५. अपने अनुयायियों को धर्म के प्रावधानों और नैतिकता की शिक्षा देना।

६. पापियों और मूर्तिपूजकों तथा इनके अलावा अन्य अनेकेश्वरवादियों का मार्गदर्शन करना।

७. लोगों को इस बात से अवगत कराना कि वे मरने के बाद पुनः जीवित किए जायेंगे, और क़ियामत (महाप्रलय) के दिन उनके कामों का हिसाब लिया जाए गा। अतः जो आदमी अकेले अल्लाह पर ईमान लाया और सत्कर्म किया उसका बदला स्वर्ग है, और जिसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक व साझी ठहराया और अवज्ञा किया तो उसका ठिकाना नर्क है।

इन पैग़ंबरों और ईश्दूतों को केवल एक ही पूज्य (अल्लाह) ने पैदा किया और भेजा है। ब्रह्माण्ड और इसके भीतर उपस्थित सभी प्राणी, सृष्टिकर्त्ता अल्लाह के अस्तित्व के वक्ता हैं और उसकी वह्दानियत (एकता) की गवाही देते हैं। चुनाँचे अल्लाह सर्वशक्तिमान ही ब्रह्माण्ड और उसके अन्दर जो भी मानव, जानवर और कीड़े-मकूड़े हैं उन सब का पैदा करने वाला है। तथा वही मौत तथा नश्वर जीवन और अनन्त जीवन का सृष्टा है।

यहूदियों, ईसाईयों और मुसलमानों के निकट पवित्र ग्रंथ सभी अल्लाह के अस्तित्व और उसके एकेश्वरवाद के साक्षी हैं।

निःसंदेह यदि सत्य का खोजी निष्पक्षता और ईमानदारी से बाइबल और क़ुर्आन करीम में पूज्य की अवधारणा का अध्ययन करे तो वह उन अद्वितीय गुणों को भेद कर सकता है जो अल्लाह के लिए विशिष्ट हैं, और उनमें

उसके अलावा कथित देवता उसके तनिक भी साझी नहीं हैं। उन गुणों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

१. सत्य पूज्य सृष्टिकर्त्ता, रचयिता और पैदा करने वाला है, वह पैदा नहीं किया गया है।

२. सत्य पूज्य मात्र एक है उसका कोई साझी नहीं, न ही वह अनेक है, और न वह किसी का बाप है और न ही वह किसी का पुत्र है।

३. अल्लाह सृष्टि (मख़्लूक़) की कल्पनाओं से पवित्र और परे है, इस दुनिया में निगाहें उसे नहीं देख सकतीं।

४. अल्लाह अनादिकालिक (अनन्त) है, उसे मृत्यु नहीं आती, न वह किसी चीज़ के अन्दर हुलूल करता (घुल-मिल जाता) है और न ही वह अपनी सृष्टियों (मख़्लूक़ात) में से किसी चीज़ का रूप धारण करता या उसका अवतार लेता है।

५. अल्लाह सर्वशक्तिमान निःस्पृह, स्वयं स्थिर है, अपनी सृष्टि से बेनियाज़ है, उनका ज़रूरतमंद नहीं है। चुनाँचे न तो उसका कोई पिता है न माता, न कोई पत्नी है न पुत्र, उसे खाने, या पीने, या किसी की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है। किन्तु वे रचनाएं और सृष्टियाँ जिन्हें अल्लाह ने बनाया है, उसकी ज़रूरतमंद और मुह्ताज हैं।

६. अल्लाह अपने प्रताप व महिमा, पूर्णता और सुन्दरता के गुणों में अनुपम और अद्वितीय है, उसकी रचना में से कोई भी उनमें उसका साझी और उसके समान नहीं है। अतः उसके समान और सदृश कोई भी चीज़ नहीं।

हम इन मानदंडों और गुणों (और इनके अलावा केवल अल्लाह के लिए विशिष्ट अन्य गुणों) को किसी भी तथाकथित और कल्पित पूज्य का खण्डन करने और उसे अस्वीकारने में उपयोग कर सकते हैं।

अब मैं उपर्युक्त एक संदेश की चर्चा की तरफ लौटता हूँ, ताकि मैं बाइबल और क़ुरआन करीम के हवालों से कुछ प्रमाणों (दलीलों) को प्रस्तुत करूँ जो अल्लाह की वह्दानियत (एकता) को सुनिश्चित और प्रमाणित करते हैं। किन्तु इस से पहले मैं आप के साथ इस विचार को साझा करना चाहता हूँ कि :

कुछ ईसाई लोग आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछ सकते हैं कि : यह बात स्पष्ट है कि अल्लाह (पूज्य) एक है और हम एक पूज्य में विश्वास रखते हैं, तो फिर मुद्दा क्या है?

वास्तविकता यह है कि ईसाई धर्म के विषय में ढेर सारी सामग्रियों के पढ़ने और गहन अध्ययन करने तथा ईसाईयों के साथ अधिक वार्ता और बातचीत करने के उपरान्त मैं ने यह पाया है कि उनके निकट ''अल्लाह'' (जैसाकि उनमें से कुछ लोगों की कल्पना है) निम्न तत्वों को शामिल है :

१. अल्लाह पिता।

२. अल्लाह पुत्र।

३. अल्लाह रूहुल-कुद्स (पवित्र-आत्मा)।

सामान्य बोध और शुद्ध तर्क एक निष्पक्ष शोधकर्ता से इस बात का आह्वान करते हैं कि वह इन ईसाइयों से प्रश्न करे कि :

❖ तुम्हारे कथन कि ''अल्लाह एक है'' का क्या अर्थ है जबकि तुम तीन पूज्यों की ओर संकेत करते हो?

❖ क्या अल्लाह एक है जो तीन में घुल-मिल गया है या तीन है जो एक में घुला-मिला है। (तीन में एक है या एक में तीन)?

इसके अलावा, ईसाइयों की कुछ मान्यताओं के अनुसार, इन तीनों पूज्यों के विभिन्न कर्तव्य (पद), अस्तित्व और रूप हैं जो इस प्रकार हैं :

१. अल्लाह पिता = सृष्टिकर्ता और रचयिता

२. अल्लाह पुत्र = मुक्तिदाता (उद्धारक)

३. अल्लाह रूहुल-कुद्स (पवित्र-आत्मा) = सलाहकार (रक्षक और हिमायती)

यह भ्रम कि ईसा मसीह अल्लाह का बेटा, या स्वयं ईश्वर या ईश्वर (अल्लाह) का एक हिस्सा हैं, पूर्ण रूप से उस बात के विरूद्ध और विपरीत है जिसे तौरात और इंजील ने

प्रमाणित किया है कि अल्लाह को इस दुनिया में कोई नहीं देख सकता :

“तुम लोगों ने उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुम ने उसका रूप देखा है।” (इंजील यूहन्ना ५:३७)

“उसे न किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है।” (1 तीमुथियुस ६:१६)

“कोई भी व्यक्ति मुझे देख नहीं सकता और यदि देख ले तो जीवित नहीं रह सकता है।” (निर्गमन ३३:२०)

इन पाठों (इबारतों) और इनके अलावा अन्य पाठों के आधार पर, मैं आश्चर्य प्रकट करते हुए पूरी सच्चाई और ईमानदारी से यह पूछता हूँ कि उन लोगों के बीच जो यह कहते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम ही अल्लाह (पूज्य) हैं और बाइबल के उन पाठों के बीच जो इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिस ने अल्लाह

को देखा हो या उसकी आवाज़ सुनी हो, (इन दोनों विपरीत बातों के बीच) सामंजस्य (मिलान) कैसे पैदा कर सकते हैं?!

- क्या उस समय यहूदियों, ईसा के परिवारजनों और उनके मानने वालों ने ईसा मसीह (कुछ ईसाइयों की मान्यता के अनुसार अल्लाह पुत्र) को नहीं देखा और उनकी आवाज़ नहीं सुनी?

- तौरात और इन्जील इस बात को को कैसे सुनिश्चित और प्रमाणित करते हैं कि अल्लाह को न कोई देख सकता है और न उसकी आवाज़ सुन सकता है, फिर हम ऐसे लोगों को पाते हैं जो यह आस्था रखता है कि वह ईसा जिसके व्यक्तित्व को उन्होंने ने देखा और उसकी आवाज़ सुनी है, वही अल्लाह या अल्लाह का बेटा है?

  क्या अल्लाह की वास्तविकता से संबंधित कोई गुप्त रहस्य और भेद है?

तौरात तो बिल्कुल इसके विपरीत बात को ज़ोर देकर स्पष्ट करता है, चुनाँचि अल्लाह के विषय में उसका यह कथन उल्लेख करता है कि : ‘‘मैं यहोवा हूँ। मेरे सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। मैं ने अकेले ये बातें नहीं कीं। मैं ने मुक्त भाव से कहा है। संसार के किसी भी अन्धेरे में मैं अपने वचन नहीं छुपाता। ... मैं परमेश्वर हूँ, और मैं सत्य बोलता हूँ। मैं वही बातें कहता हूँ जो सत्य हैं।’’ (यशायाह ४५:१८-१६)

अतः वास्तविकता क्या है?

कृपया बाइबल के पिछले पाठ को कई बार पढ़ें और देर तक उस में मनन चिंतन करें।

मात्र एक संदेश !

आईये, अब हम एक साथ बाइबल और कुर्आन करीम में अल्लाह (परमेश्वर) की वास्तविकता के बारे में खोज करें। आशा है कि आप इन आयतों और पाठों (मूलग्रंथों) में मनन चिंतन करने तथा इस पुस्तिका का न्याय्य, निष्पक्ष और आलोचनात्मक अध्ययन करने के बाद अपने विचारों और दृष्टिकोणों से मुझे अवगत करायेंगे।

निष्पक्षता को ध्यान में रखते हुए, मैं बिना किसी टिप्पणी के प्रमाणों को प्रस्तुत कर रहा हूँ, आशा है कि आप ध्यानपूर्वक और निष्पक्षता के साथ बिना किसी पूर्व धारणा या पहले से कोई राय बनाए हुए उनमें मनन चिंतन करेंगे।

बाइबल (पुराना नियम) में एक सत्य पूज्य अल्लाह :

❖ ‘‘इस्राएल के लोगो, ध्यान से सुनो! यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है।’’ (व्यवस्था विवरण 6:4)

❖ ‘‘ताकि तू समझ ले कि ‘वह मैं ही हूँ’ और मुझ में विश्वास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मुझसे पहले कोई परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर नहीं होगा। मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और कोई उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ।’’ (यशायाह 43:10–11)

❖ ‘‘परमेश्वर केवल मैं ही हूँ। अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। मैं ही आदि हूँ। मैं ही अंत हूँ। मेरे जैसा परमेश्वर कोई और नहीं है।’’ (यशायाह 44:6)

❖ ‘‘मैं ही एक मात्र यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई और परमेश्वर नहीं है। क्या ऐसा कोई और है जो अपने लोगों की रक्षा करता है? नहीं, ऐसा कोई परमेश्वर नहीं है।’’ (यशायाह 45:21)

क्या आप को इनके समान अन्य पाठ (श्लोक) भी स्मरण हैं?

बाइबल (नया नियम) में एक सत्य पूज्य अल्लाह :

❖ ''अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशू मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।'' (यूहन्ना 17:3)

❖ ''अपने प्रभु परमेश्वर (अल्लाह) की उपासना कर, और केवल उसी की सेवा कर।'' (मत्ती 4:10)

❖ ''हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एक मात्र प्रभु है ... परमेश्वर एक है और उसके अलावा और कोई दूसरा नहीं है।'' (मरकुस 12:28–33)

❖ ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ भी एक ही। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह यीशु।'' (1 तीमुथियुस 2:5)

❖ एक व्यक्ति यीशु के पास आया और बोला: ''गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिये?'' यीशु ने उस से कहा, ''अच्छा क्या है, इसके बारे में तू मुझ से क्यों पूछ रहा? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही है!'' (मत्ती 19:16–17)

क्या आप अन्य ऐसे पाठ स्मरण कर सकते हैं जो सुनिश्चित करते हैं कि अल्लाह एक ही है।? (तीन नहीं है!)

क़ुरआन करीम में एक सत्य पूज्य अल्लाह :

- ‘‘(आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक (ही) है। अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है। न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया। और न कोई उसका समकक्ष है।’’ (क़ुरआन– 113:1–4)

- ‘‘मेरे सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं, अतः तुम मेरी ही उपासना करो।’’ (क़ुरआन– 21:25)

- ‘‘वो लोग भी पूरी तरह से काफ़िर (अधर्मी) हो गये जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है। वास्तव में अल्लाह के सिवा

कोई सच्चा पूज्य नहीं, और अगर यह लोग अपने क़ौल से न रूके तो उन में से जो कुफ्र में रहेंगे उन्हें कष्टदायक अज़ाब अवश्य पहुँचेगा।'' (कुर्आन– 5:73)

❖ ''निःसन्देह तुम सब का पूज्य एक ही है।'' (कुर्आन– 37:4)

❖ ''क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा पूज्य भी है? कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो अपना प्रमाण लाओ।'' (कुर्आन–27:64)

वास्तविकता यह है कि (अल्लाह के एकेश्वरवाद) का यह संदेश ही कुर्आन करीम का मूल विषय है।

अन्त

बाइबल और कुर्आन करीम के उपर्युक्त पाठ और उनके अतिरिक्त अन्य सैकड़ों प्रमाण, इस बात को इस तरह सुनिश्चित करते हैं कि कोई सन्देह नहीं रह जाता कि अल्लाह एक है उसके अलावा कोई दूसरा पूज्य नहीं, जैसाकि बाइबल का कथन है : **"हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एक मात्र प्रभु है ... परमेश्वर एक है और उसके अलावा और कोई दूसरा नहीं है।"** (मरकुस 12:28-33)

और कुर्आन करीम इसी बात को अल्लाह के इस कथन में उल्लेख करता है : **"(आप) कह दीजिए कि वह अल्लाह एक (ही) है।"** (कुर्आन- 113:1-4)

बाइबल केवल इसी बात को सुनिश्चित नहीं करता है कि अल्लाह एक है, बल्कि इस बात को भी सुनिश्चित करता है

कि अल्लाह ही रचयिता (सृष्टिकर्ता) और एकमात्र उद्धारकर्ता है : **“‘ताकि तू समझ ले कि ‘वह मैं ही हूँ’ और मुझ में विश्वास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मुझ से पहले कोई परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर नहीं होगा। मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और कोई उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ।”** (यशायाह 43:10-11)

इससे स्पष्ट हो जाता है कि ईसा या रूहुल-कुद्स (पवित्र आत्मा) या इनके अलावा किसी अन्य की ईश्वरत्व की बात कहने की कोई सनद और प्रमाण नहीं है। वे मात्र अल्लाह की रचित सृष्टियाँ और रचनाएं हैं, वे किसी भी चीज़ का अधिकार नहीं रखते हैं। अतः वे न तो पूज्य हैं और न ही अल्लाह का स्वरूप प्रकाश, या अवतार या समानरूप

(उपमा) हैं, क्योंकि अल्लाह के समान कोई चीज़ नहीं, जैसाकि बाइबल और कुर्आन करीम ने उल्लेख किया है।

अल्लाह तआला ने यहूदियों पर उनके पथभ्रष्ट हो जाने और अल्लाह के अलावा अन्य देवताओं की पूजा करने के कारण अपना क्रोध प्रकट किया है : ''**यहोवा इन लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।**'' (गिनती 25:3)

तथा मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके सोने के बछड़े को तोड़-फोड़ डाला।

दूसरी ओर, ईसाइयों के एकेश्वरवादी दल को अत्याचार और उत्पीड़न सहना पड़ा क्योंकि उसने अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) में विश्वास किया और ईसा (यीशु) अलैहिस्सलाम की एकेश्वरवाद की शिक्षाओं में परिवर्तन करने से इनकार कर दिया तथा पॉल और उसके अनुयायियों के हाथों प्रकट होनेवाले त्रिदेव की नवरीति को नकार दिया।

सारांश यह है कि अल्लाह तआला ने आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा, मुहम्मद और अन्य सभी पैगंबरों और ईश्दूतों (उन सभी पर अल्लाह की दया और शांति अवतरित हो) को इस लिए भेजा ताकि वे लोगों को अल्लाह में विश्वास रखने और हर प्रकार की उपासना को केवल उसी के लिए विशिष्ट करने के लिए आमंत्रित करें जिसका कोई साझी और समकक्ष नहीं। अतः उन सब का एकमात्र संदेश यही था कि :

सत्य पूज्य केवल एक है, अतः अकेले उसी की उपासना करो।

जब ईश्दूतों और पैगंबरों का संदेश एक ही है, तो उनका धर्म भी एक हुआ। अतः प्रश्न उठता है कि इन ईश्दूतों और पैगंबरों का धर्म क्या है?

उनके संदेश का सार अल्लाह के प्रति ‘‘समर्पण’’ पर आधारित है, यह शब्द अरबी भाषा में ‘‘इस्लाम’’ के अर्थ और आशय को अभिव्यक्त करता है ।

तथा कुरआन करीम ने इस बात को सुनिश्चित किया है कि इस्लाम ही अल्लाह के सभी पैगंबरों और ईश्दूतों का सच्चा धर्म था। कुऱ्आन की इस सच्चाई का अनुगमन और खोज बाइबल में भी कर सकते हैं। (यदि अल्लाह ने चाहा, तो हम बाइबल में इस सच्चाई की खोज, अपनी आगामी पुस्तिका में करेंगे).

अन्त में, मोक्ष प्राप्त करने के लिए हमारे ऊपर इस संदेश को स्वीकारना तथा सच्चाई और ईमानदारी के साथ इस में विश्वास करना अनिवार्य है। किन्तु केवल इतना ही काम काफी नहीं है! बल्कि अल्लाह के सभी ईश्दूतों और पैगंबरों में विश्वास करना (जिनमें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में विश्वास करना भी शामिल है) और उनके मार्गदर्शन पर चलना और उसके अनुसार कार्य करना भी हमारे ऊपर अनिवार्य है। यही एक सौभाग्यशाली अनन्त जीवन का मार्ग है।

अतः ऐ ईमानदारी से सत्य के खोजकर्ता और मोक्ष के अभिलाषी! आपको इस मामले में विचार करना चाहिए और आज ही इसमें मनन चिंतन करना चाहिए, इस से पहले कि अवसर हाथ से निकल जाए। उस मौत के चंगुल में फँसने से पहले जिसका प्रहार अचानक ही होता है! किसे पता कि मौत का बुलावा कब आ जाए?

इस महत्वपूर्ण और निर्णायक मामले में पुनर्विचार और मनन चिंतन करने के बाद, आप सचेत बुद्धि और सच्चे दिल से यह निर्णय कर सकते हैं कि अल्लाह एक है, उसका कोई साझी नहीं और न कोई उसकी संतान है, तथा आप उस पर ईमान ले आयें और केवल उसी की उपासना करें, तथा इस बात पर भी ईमान लायें कि नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा के समान मुहम्मद एक ईश्दूत और संदेष्टा हैं।

❖ और अब आप - यदि चाहें तो - इन शब्दों को अपनी जुबान से बोल सकते हैं कि :

'अश्हदो अन्–ला–इलाहा इल्लल्लाह,
व–अश्हदो अन्ना मुहम्मदन् रसूलुल्लाह'

अर्थात् : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के सन्देष्टा (पैग़ंबर) हैं।

यह गवाही सौभाग्यपूर्ण अनन्त जीवन के मार्ग पर पहला व्यावहारिक क़दम है, और यही स्वर्ग के द्वार की असली कुंजी है।

यदि आप ने इस्लाम के मार्ग को अपनाने का मन बना लिया है, तो आप अपने मुसलमान दोस्त या पड़ोसी, या निकट्तम मस्जिद या इस्लामी केंद्र की सहायता ले सकते हैं, या आप स्वयं मुझ से संपर्क साधें या पत्र व्यवहार करें (यह मेरा सौभाग्य होगा)।

‘‘आप कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने अपनी जानों पर अत्याचार किये हैं तुम अल्लाह की दया से निराश न हो। निःसन्देह अल्लाह सभी पापों को क्षमा कर देता है, वास्तव में वह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान् है। और तुम सब अपने रब (परमेश्वर) की ओर झुक जाओ और उसका आज्ञापालन किए जाओ, इससे पहले कि तुम्हारे पास अज़ाब आ जाए फिर तुम्हारी मदद न की जाए। और तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारी तरफ जो सबसे अच्छी बात उतारी गई है उसकी पैरवी करो, इससे पहले कि अचानक तुम पर अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न चले। (कुर्आन– 39:53–55)

तथा एक दूसरी चीज़ भी है ...

अन्तिम विचार :

विवेकपूर्ण और समझदारी के साथ इस एक संदेश को पढ़ने के बाद, सच्चे और गंभीर लोग पूछ सकते हैं कि :

- सच्चाई क्या है?
- गलत क्या है?
- क्या करना चाहिए?

यदि अल्लाह ने चाहा, तो इन और इनके अलावा अन्य प्रश्नों पर अपने अगले लेखनों में चर्चा करूँगा।

अतिरिक्त जानकारी, या प्रश्न, या सुझाव के लिए निम्नलिखित पते पर लेखक से संपर्क करने में संकोच न करें :

पोस्ट बाक्स नं.: 418 – हफूफ

अह्सा–31982 सऊदी अरब

abctruth@hotmail.com

info@abctruth.com

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

atazia75@gmail.com *